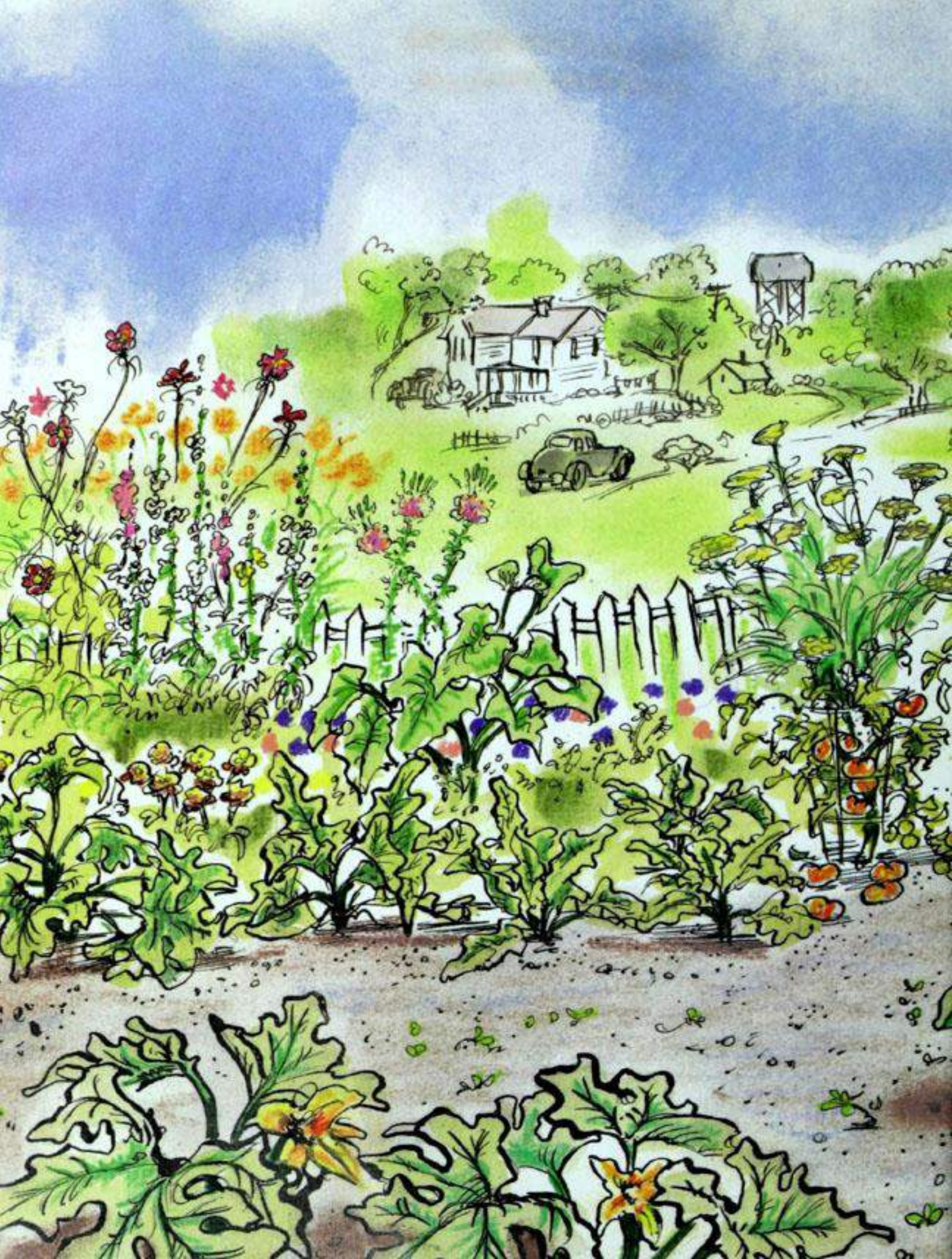
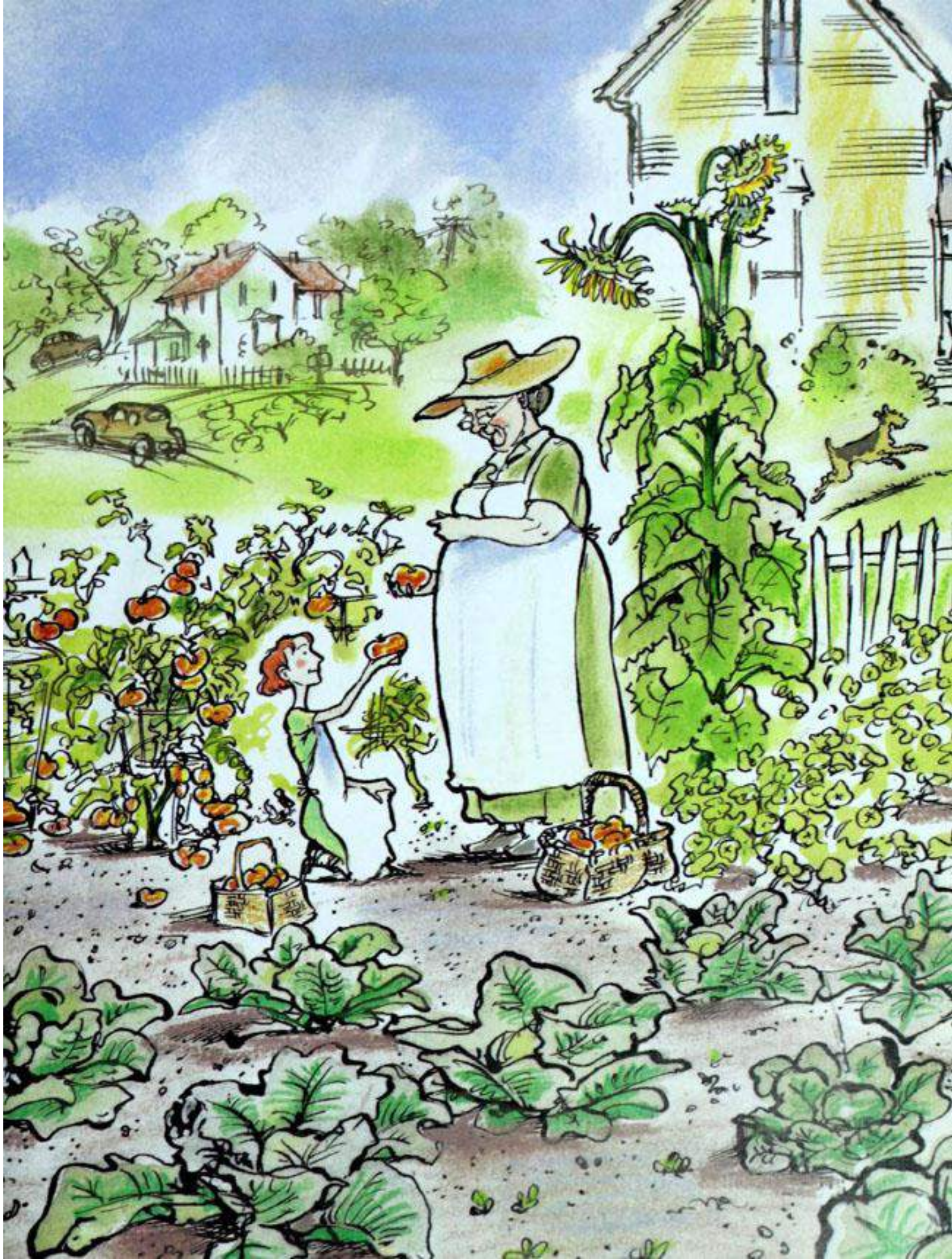


माली

साराह, चित्र : डेविड, हिंदी : विदूषक







माली

साराह, चित्र : डेविड, हिंदी : विदूषक





अगस्त 27, 1935

प्रिय अंकल जिम,

नानी ने कहा है कि हालात ठीक होने तक आप चाहते हैं कि मैं शहर में आकर आपके साथ रहूँ. उन्होंने आपको यह भी बताया होगा कि पापा बहुत समय से बेरोजगार हैं, और लम्बे अर्से से माँ को कपड़े बनाने का कोई आर्डर नहीं मिला है.

हम सब रोए, पापा भी. फिर माँ ने हमें अपनी मज़ेदार कहानी से हंसाया – कैसे बचपन में आपने उनका पेड़ के ऊपर पीछा किया. क्या वो आपने सच में किया?

मैं छोटी हूँ, पर ताकतवर हूँ. हर काम में, मैं आपकी मदद करूंगी. नानी का कहना है कि होमवर्क करने के बाद ही मैं और कुछ काम करूँ.

आपकी भतीजी - लिडिया ग्रेस



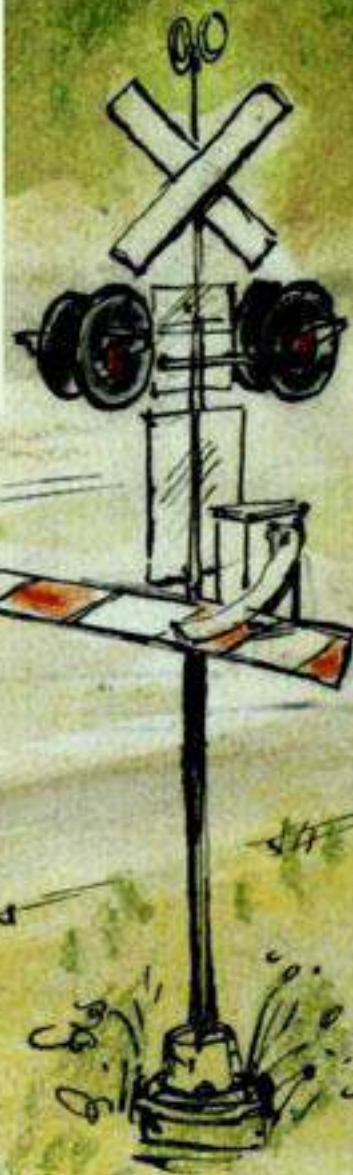
सितम्बर 03, 1935

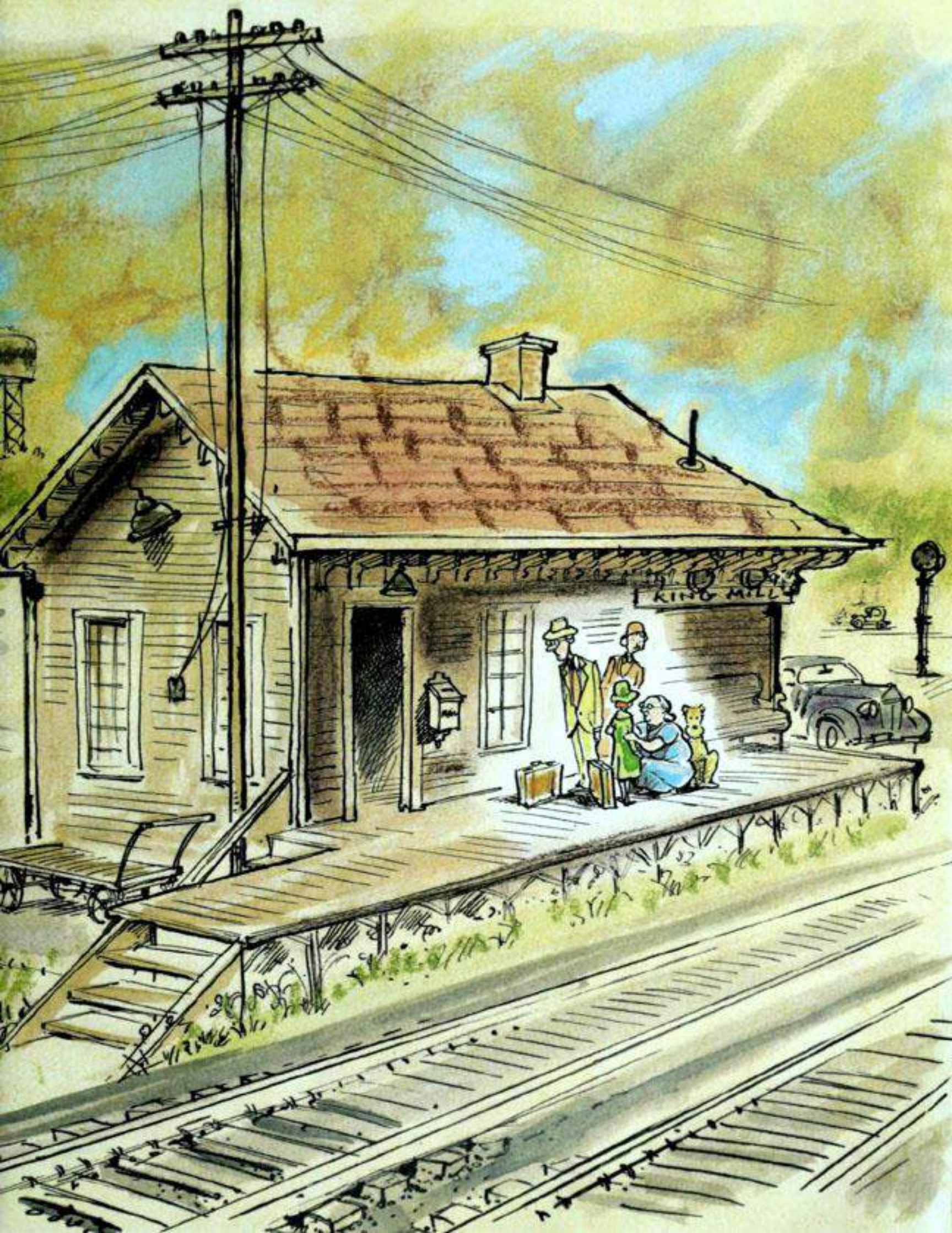
प्रिय अंकल जिम,

यह पत्र मैं आपको स्टेशन से लिख रही हूँ.
पिछली चिट्ठी में मैं तीन ज़रूरी बातें लिखना भूल
गई. शायद उन्हें लिखते हुए मुझे शर्म महसूस हो
रही थी.

1. मैं बागवानी बहुत अच्छी जानती हूँ, पर
बेकिंग के बारे में कुछ भी नहीं जानती.
 2. मैं बेकिंग सीखने की इच्छुक हूँ. पर क्या मैं
कहीं कुछ बीज बो सकती हूँ?
 3. अगर आप मुझे नानी के नाम पर लिडिया
ग्रेस कहकर बुलाएँ तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा.
- आपकी भतीजी

लिडिया ग्रेस





(ट्रेन पर) सितम्बर 04, 1935

प्रिय माँ,

तुमने अपनी ड्रेस काटकर मेरे लिए जो ड्रेस बनाई उसमें मैं बहुत सुन्दर लगती हूँ. क्या तुम्हें अपनी ड्रेस याद तो नहीं आती?

प्रिय पापा,

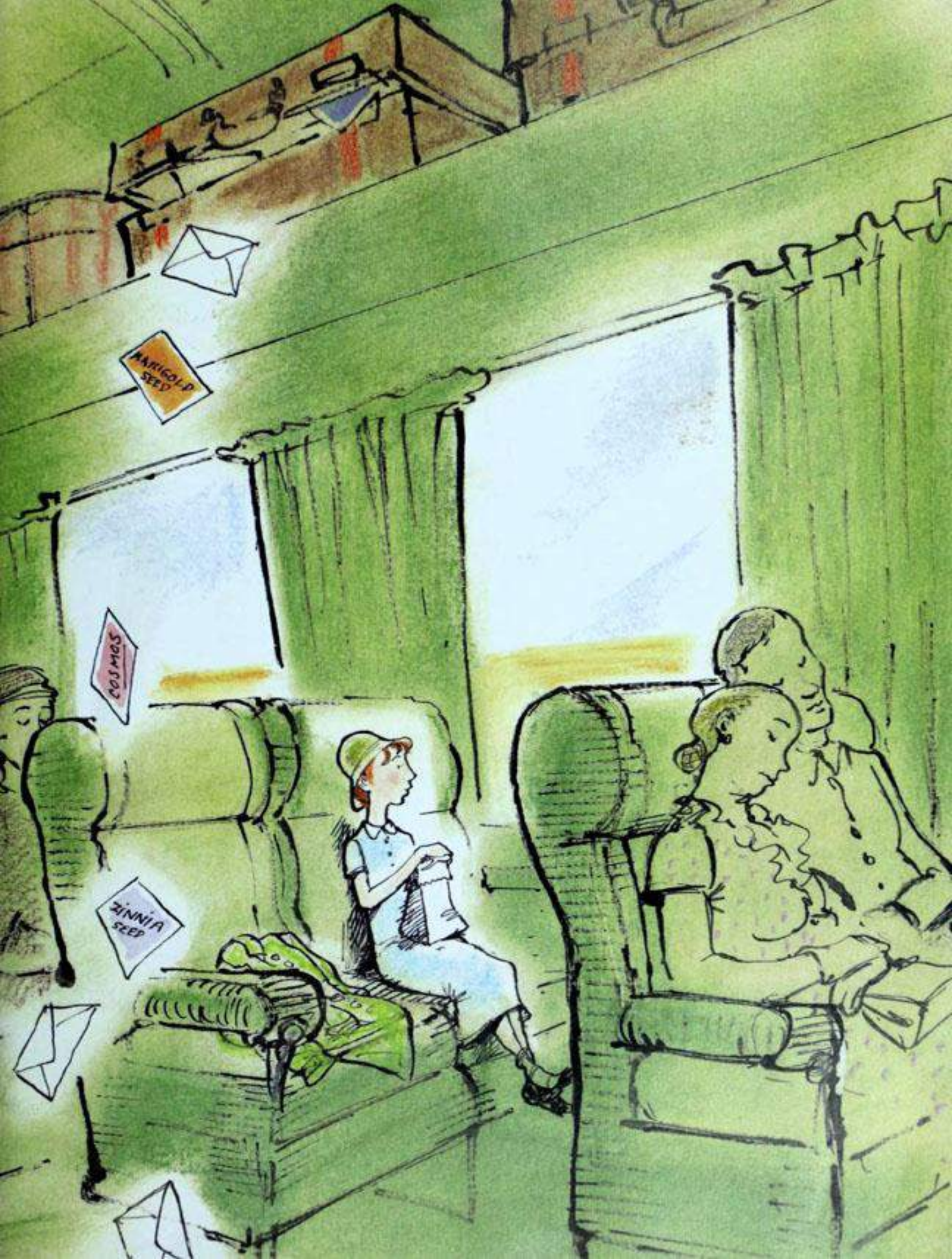
आपने अंकल जिम की जो पहचान बताई वो मुझे याद है: "बस माँ के चेहरे पर एक बड़ी नाक और मूँछ देखना!" मैं अंकल को यह नहीं बताऊंगी. (क्या अंकल को मज़ाक पसंद हैं?)

मेरी प्रिय नानी,

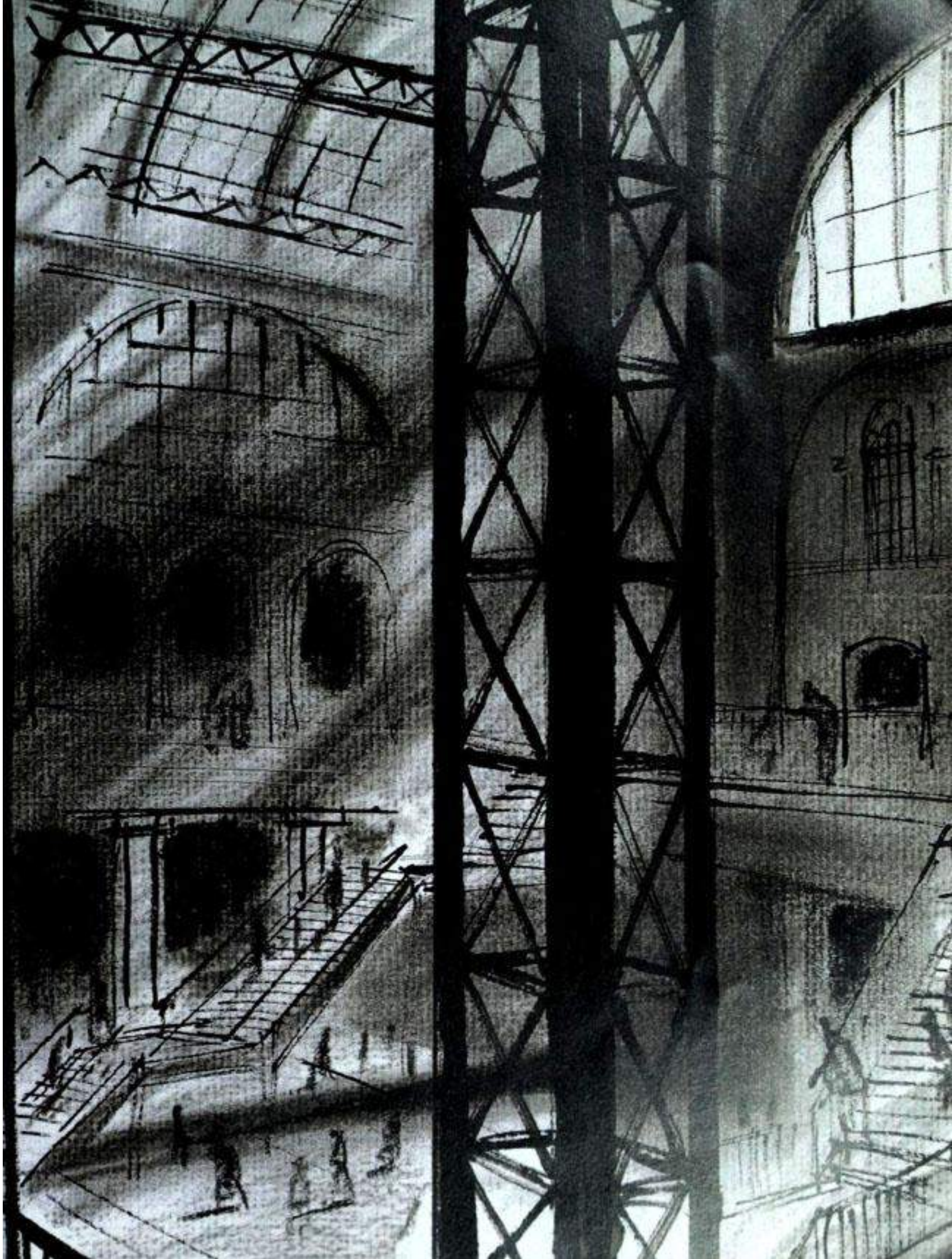
आपने जो बीज दिए उनके लिए शुक्रिया. ट्रेन के हिलने-डुलने से मुझे नींद आ रही है. और जब भी मुझे झपकी आती है तब मुझे बगीचे और फूल ही दिखाई देते हैं.

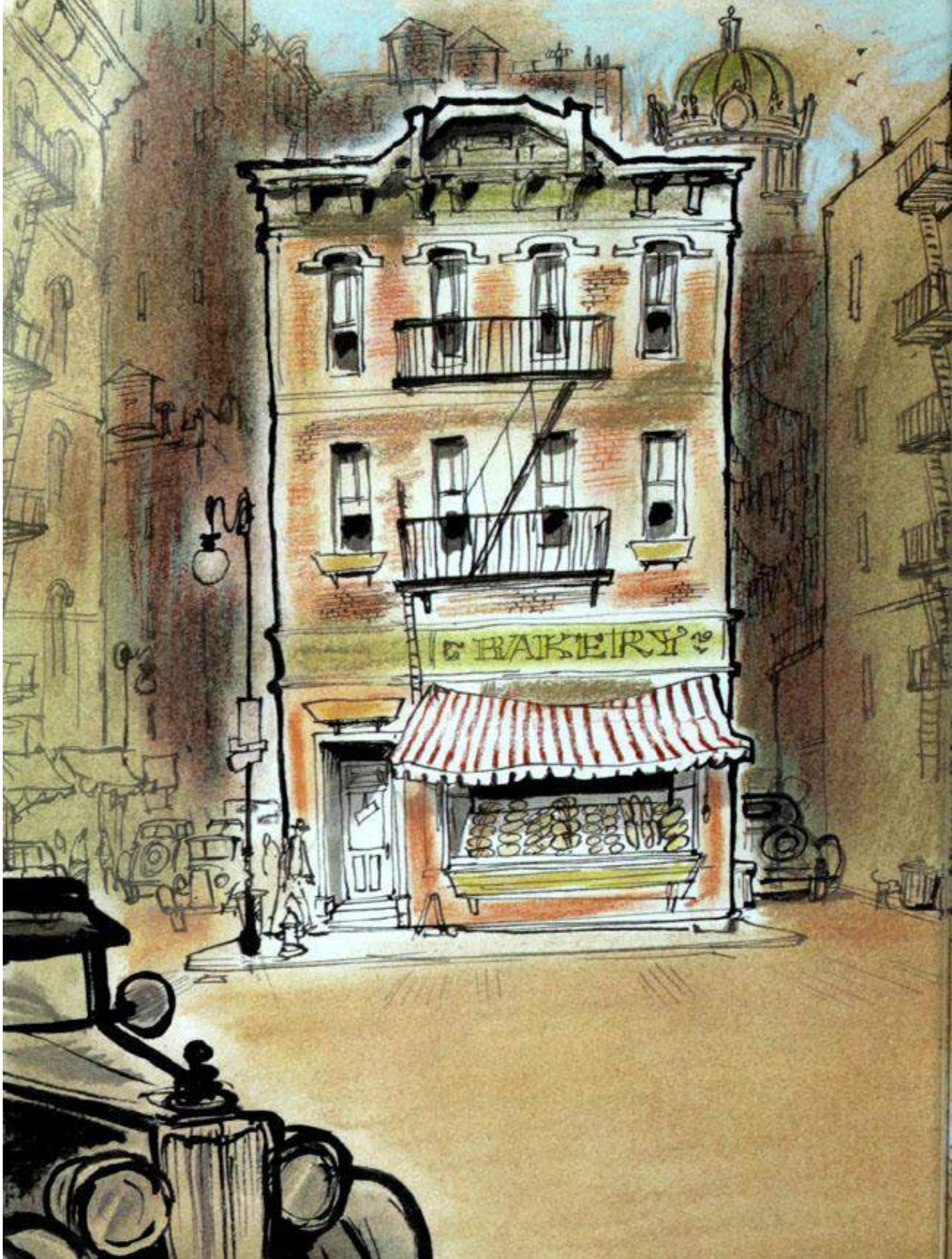
सबको प्रेम सहित - लिडिया ग्रेस











सितम्बर 15, 1935

प्रिय माँ, पापा और नानी,
मैं बेहद उत्साहित हूँ!!

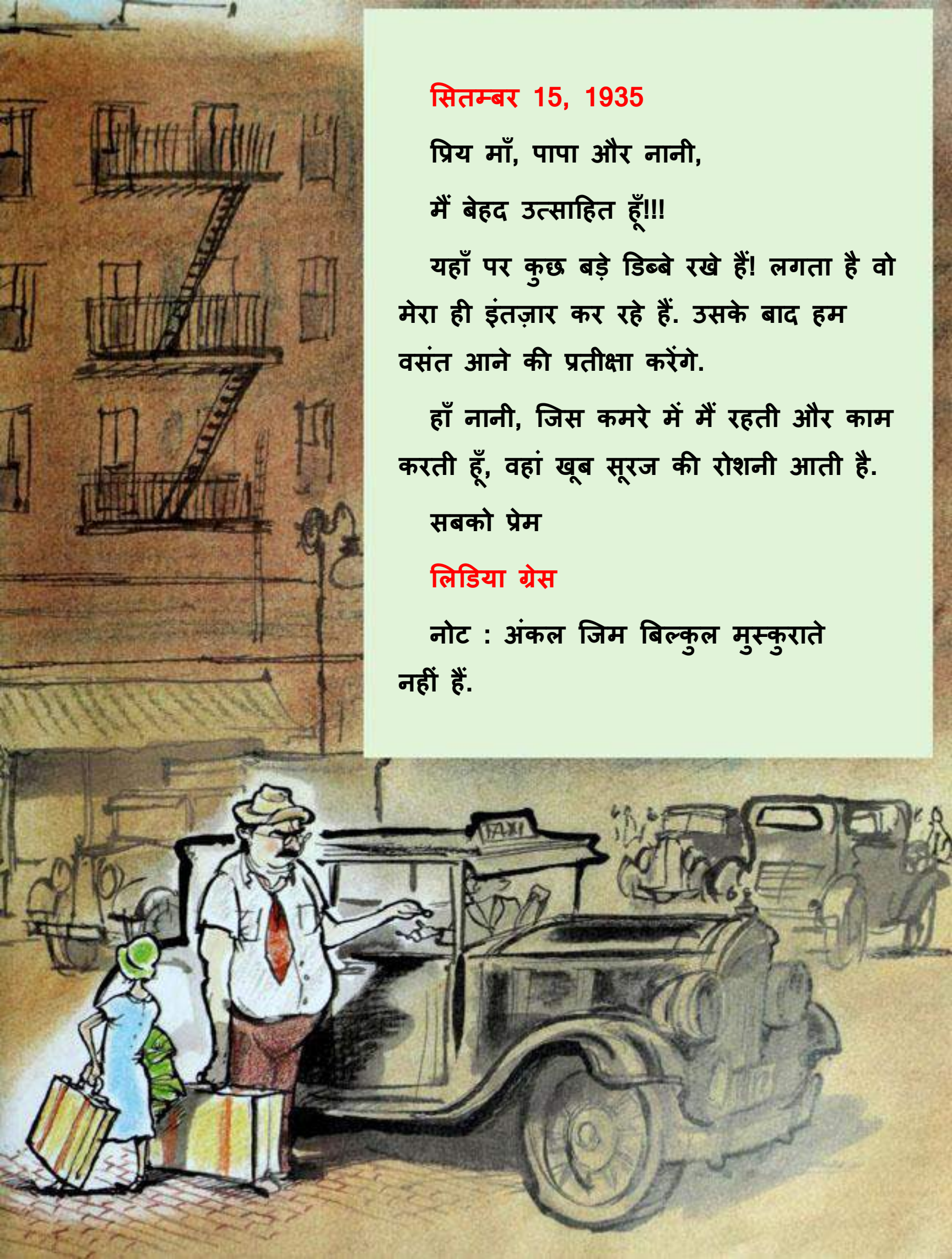
यहाँ पर कुछ बड़े डिब्बे रखे हैं! लगता है वो मेरा ही इंतज़ार कर रहे हैं. उसके बाद हम वसंत आने की प्रतीक्षा करेंगे.

हाँ नानी, जिस कमरे में मैं रहती और काम करती हूँ, वहां खूब सूरज की रोशनी आती है.

सबको प्रेम

लिडिया ग्रेस

नोट : अंकल जिम बिल्कुल मुस्कुराते नहीं हैं.



दिसम्बर 25, 1935

प्रिय माँ, पापा और नानी,

आपने क्रिसमस पर बीजों की जो लिस्ट भेजी वो मुझे बेहद पसंद आई. नानी आपने जो फूलों की कलमें भेजीं उनके लिए शुक्रिया. आशा है आपको मेरी ड्राइंग मिलीं.

अंकल जिम के लिए मैंने एक लम्बी कविता लिखी. वो मुस्कुराए नहीं फिर भी मुझे लगा कि वो उन्हें पसंद आई. मैंने कविता उन्हें पढ़कर सुनाई, फिर उसे उनकी जेब में रखा.

सबको प्रेम

लिडिया ग्रेस





फरवरी 12, 1936

मेरी प्रिय नानी,

आपने क्रिसमस पर जो कलमें भेजीं थीं उनके लिए शुक्रिया. उन्हें आपको अब देखना चाहिए!

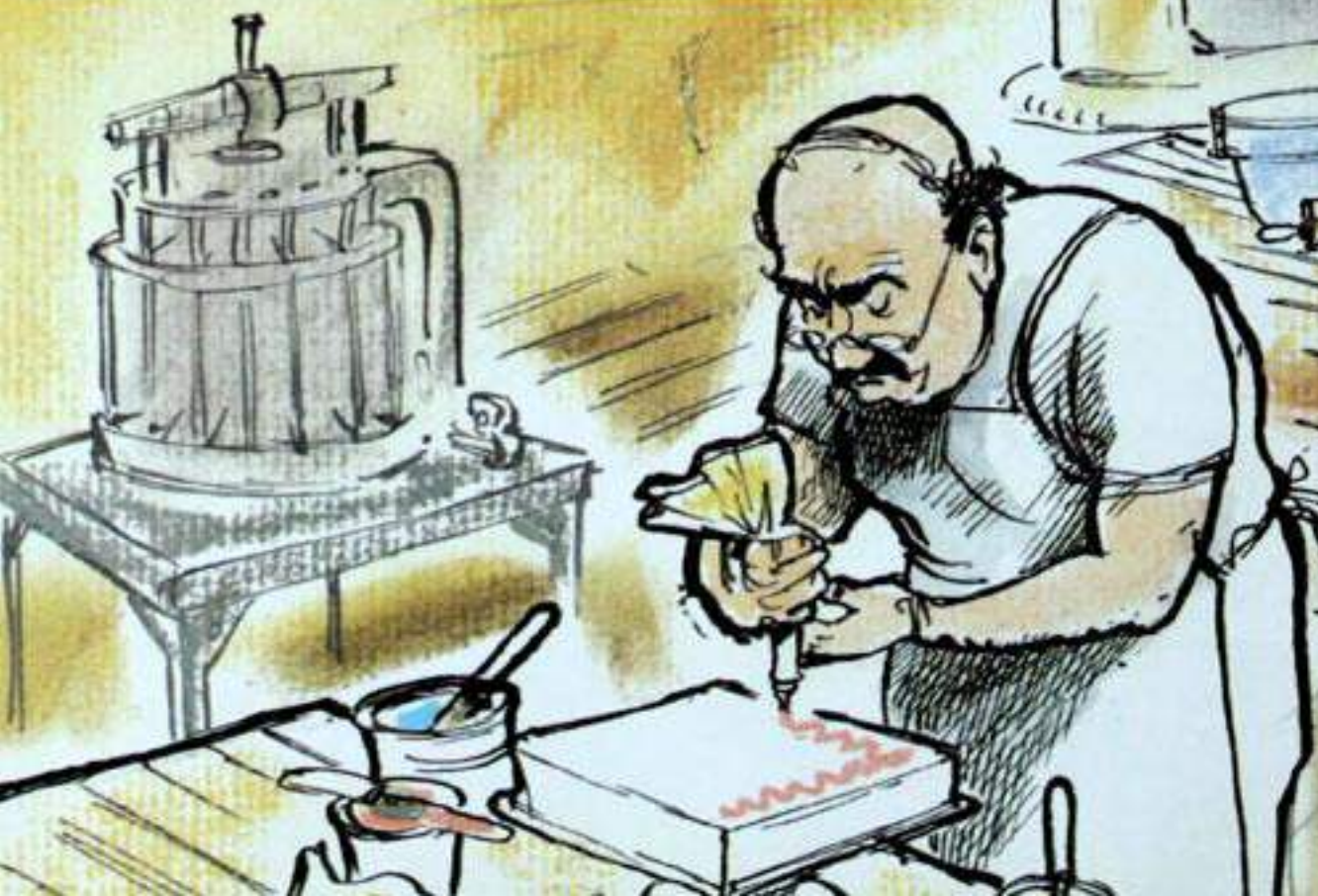
मुझे एड और एम्मा पसंद हैं. वो अंकल जिम के यहाँ काम करते हैं. जब मैं आई तो एम्मा ने कहा कि अगर मैं उसे सब फूलों के लैटिन नाम बताऊं तो वो मुझे ब्रेड बनाना सिखाएगी. अब छह महीने के अन्दर मैं ब्रेड का आटा गूँथ सकती हूँ और एम्मा अब लैटिन में बातें करती है.

एक खुशखबरी : हमारी बेकरी में एक बिल्ली है जिसका नाम है ओटिस. इस समय वो मेरे पैरों के पास सो रही है.

सबको प्रेम

लिडिया ग्रेस

नोट : अंकल जिम अभी भी नहीं हंस रहे हैं. पर मुझे उम्मीद है वो जल्दी ही हँसेंगे.





मार्च 5, 1936

मेरी प्रिय नानी,

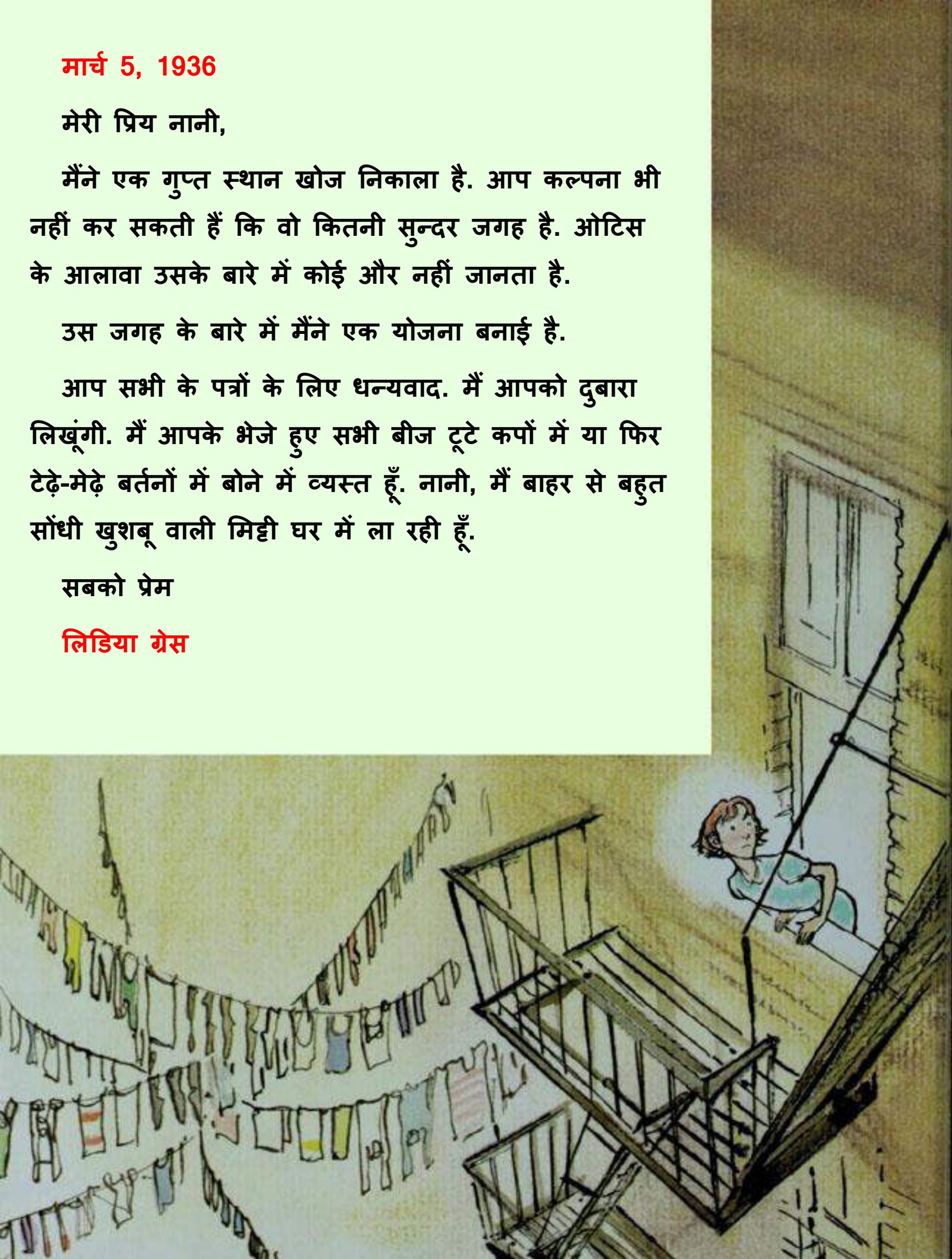
मैंने एक गुप्त स्थान खोज निकाला है. आप कल्पना भी नहीं कर सकती हैं कि वो कितनी सुन्दर जगह है. ओटिस के आलावा उसके बारे में कोई और नहीं जानता है.

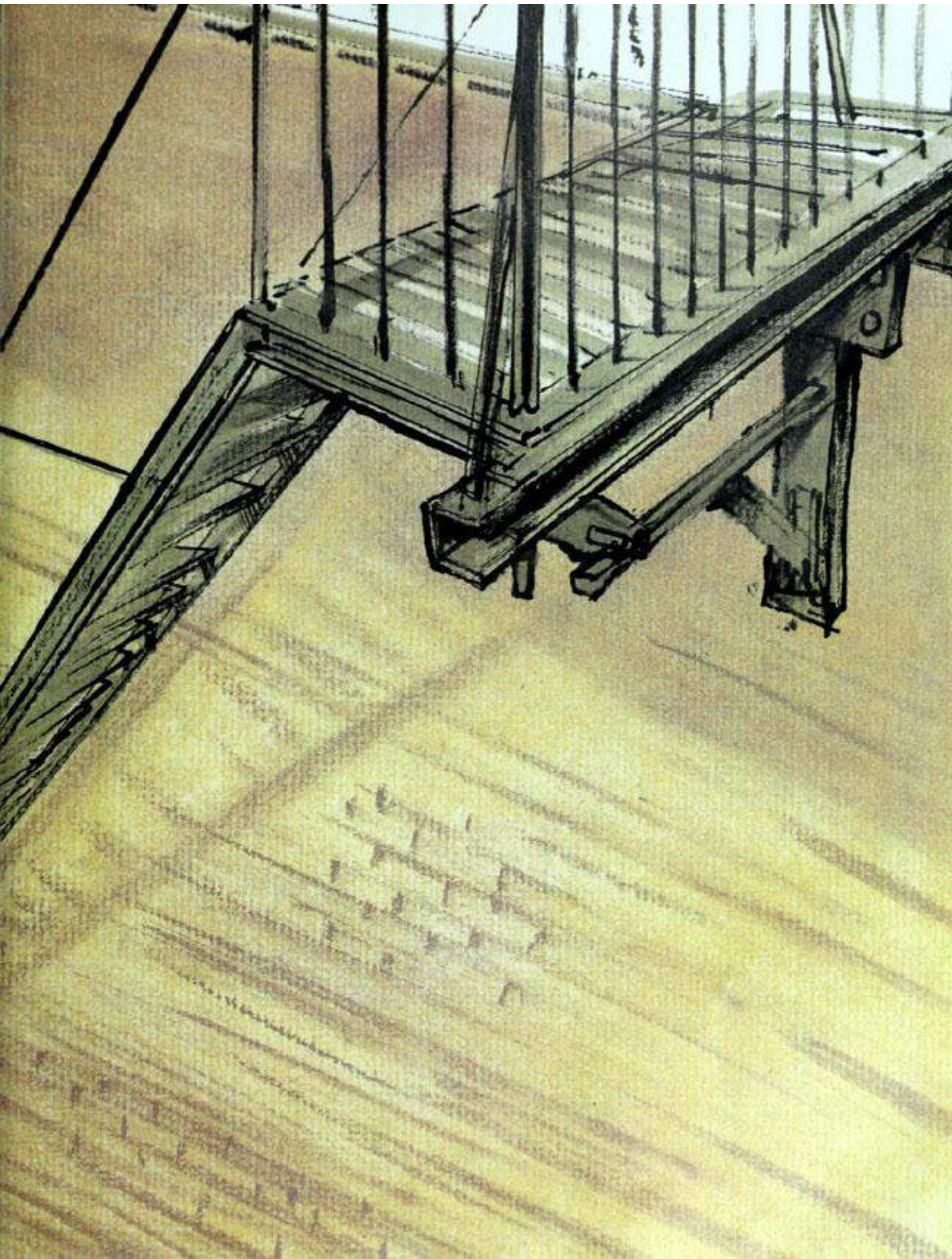
उस जगह के बारे में मैंने एक योजना बनाई है.

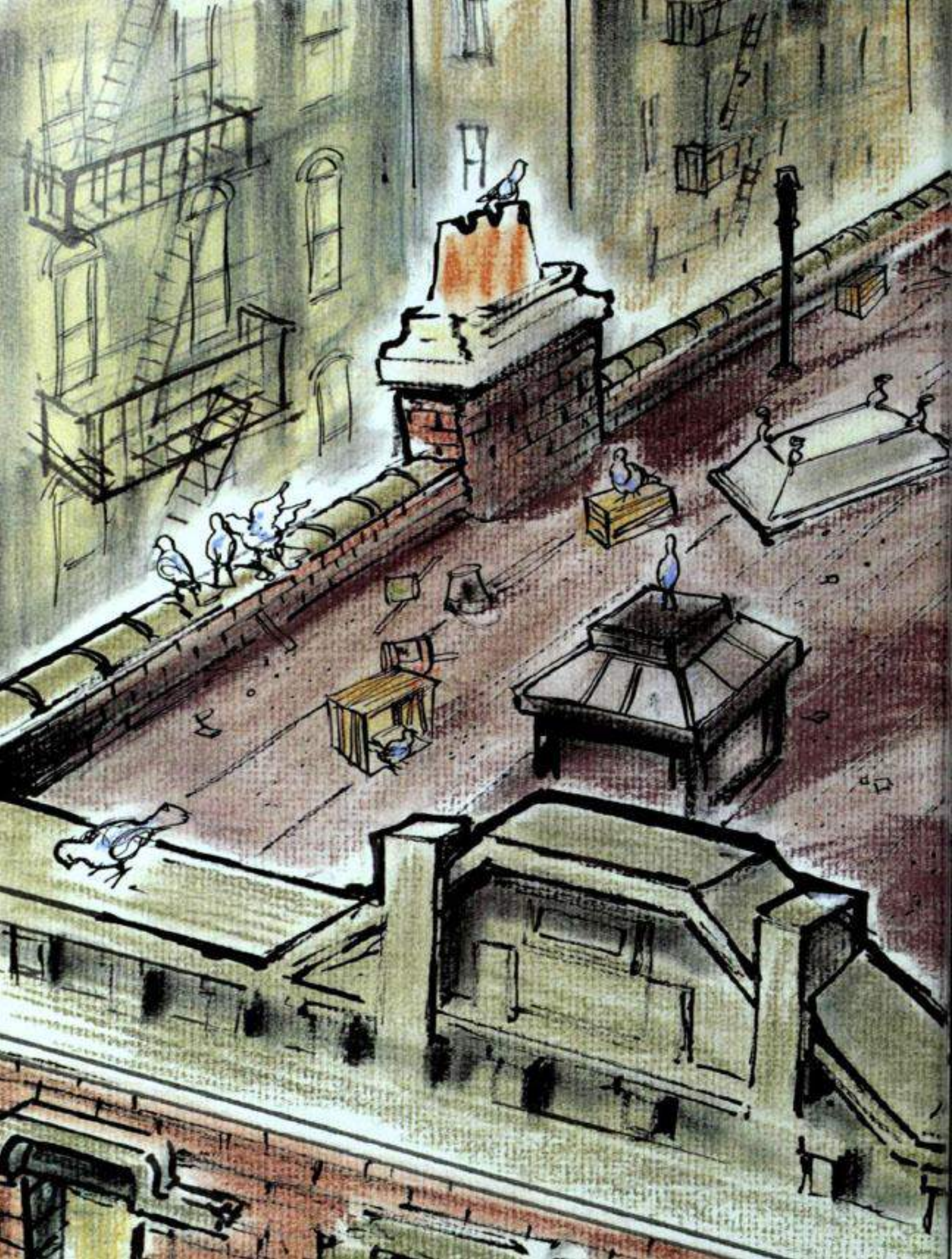
आप सभी के पत्रों के लिए धन्यवाद. मैं आपको दुबारा लिखूंगी. मैं आपके भेजे हुए सभी बीज टूटे कपों में या फिर टेढ़े-मेढ़े बर्तनों में बोलने में व्यस्त हूँ. नानी, मैं बाहर से बहुत सौंधी खुशबू वाली मिट्टी घर में ला रही हूँ.

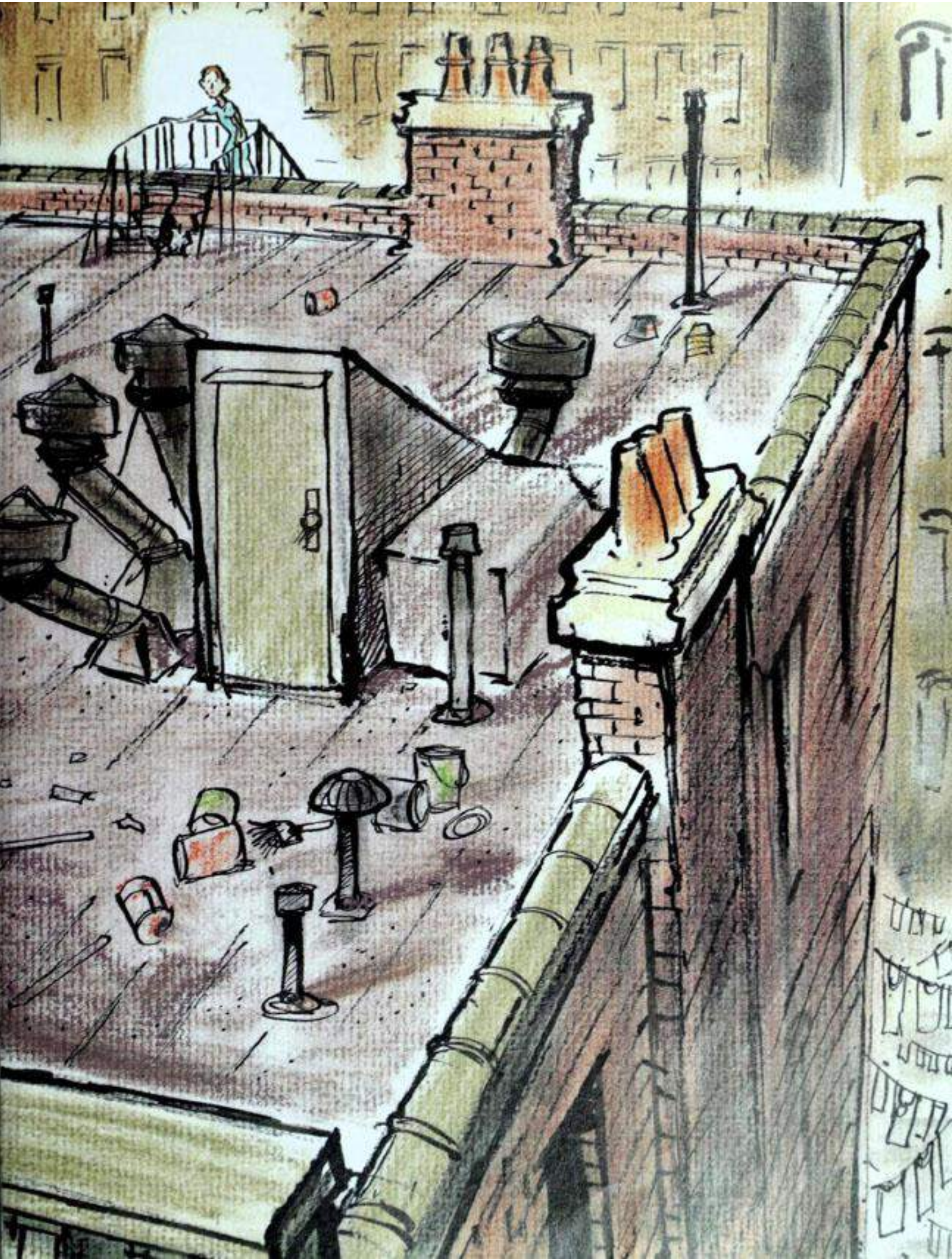
सबको प्रेम

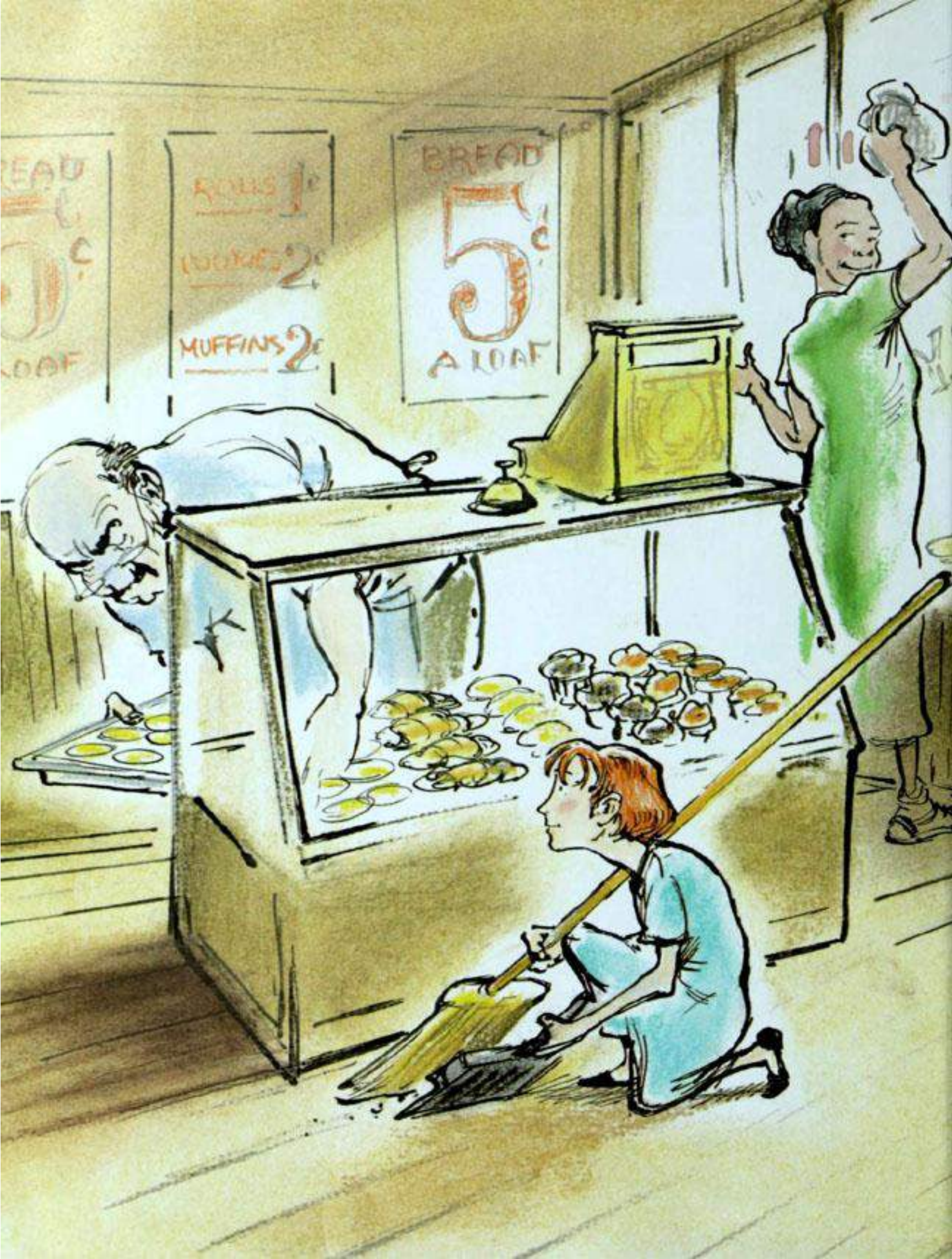
लिडिया ग्रेस











अप्रैल 27, 1936

मेरी प्रिय नानी,

सारी कलमों और बीजों में अब अंकुर फूटने लगे हैं. मुझे आपकी बात याद है, "अप्रैल की बारिश, मई में फूल लाएगी."

एम्मा और मैं मिलकर बेकरी की साफ़-सफाई कर रहे हैं और अंकल जिम के साथ एक मज़ाक भी कर रहे हैं. वो मुझे पत्र पढ़ते, खिड़कियों के डिब्बों में बीज बोते, स्कूल जाते, होमवर्क करते, और फर्श साफ़ करते हुए देखते हैं. पर उन्होंने कभी भी मुझे मेरे गुप्त स्थान में काम करते हुए नहीं देखा है.

सबको प्रेम - लिडिया ग्रेस

नोट : भविष्य में मुझे अंकल जिम से एक अच्छी मुस्कान की उम्मीद है.



मई 27, 1936

प्रिय माँ, पापा, नानी,

आज जब मैंने आपका पत्र खोला तो उसमें से कुछ मिट्टी बाहर गिरी! उसे देखकर एम्मा बहुत ज़ोरों से हंसी. छोटे पौधों को भेजने के लिया आपका बहुत शुक्रिया. बड़े लिफाफे में वो लम्बे सफ़र की ज़हमत को झेल पाए.

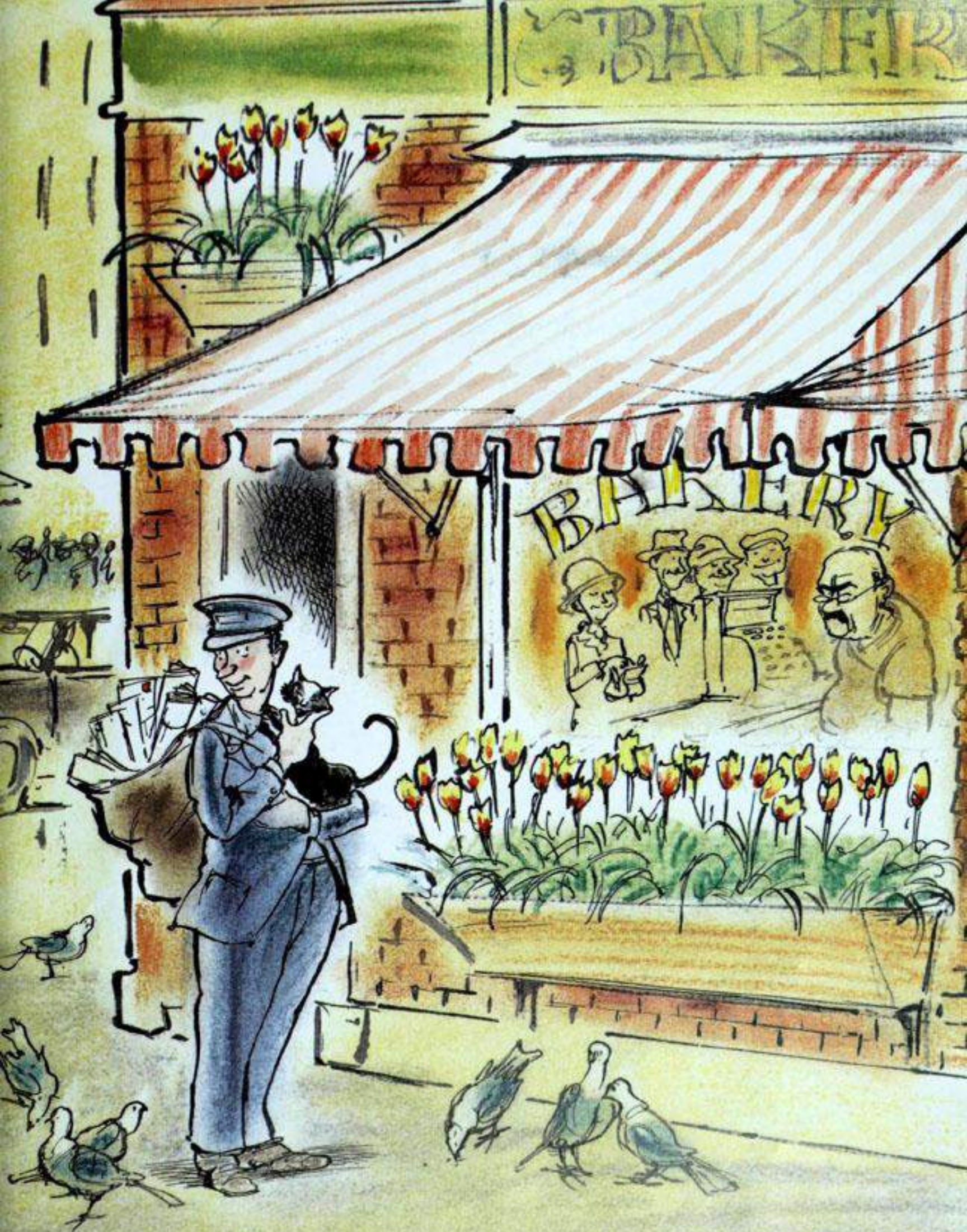
एम्मा के बारे में और कुछ : वो गुप्त स्थान में मेरी मदद कर रही है. वाह!

सबको प्रेम

लिडिया ग्रेस

नोट : अंकल जिम आज पहली बार मुस्कुराए. आज हमारी दुकान ग्राहकों से लगभग भरी थी.





जून 27, 1936

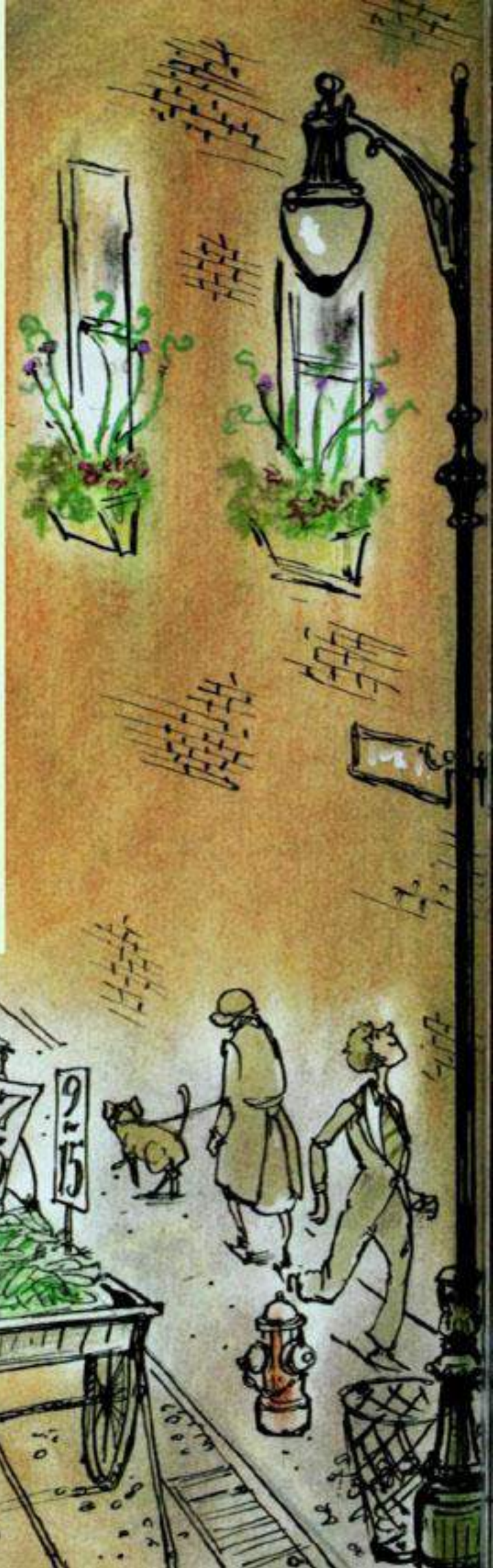
मेरी प्रिय नानी,

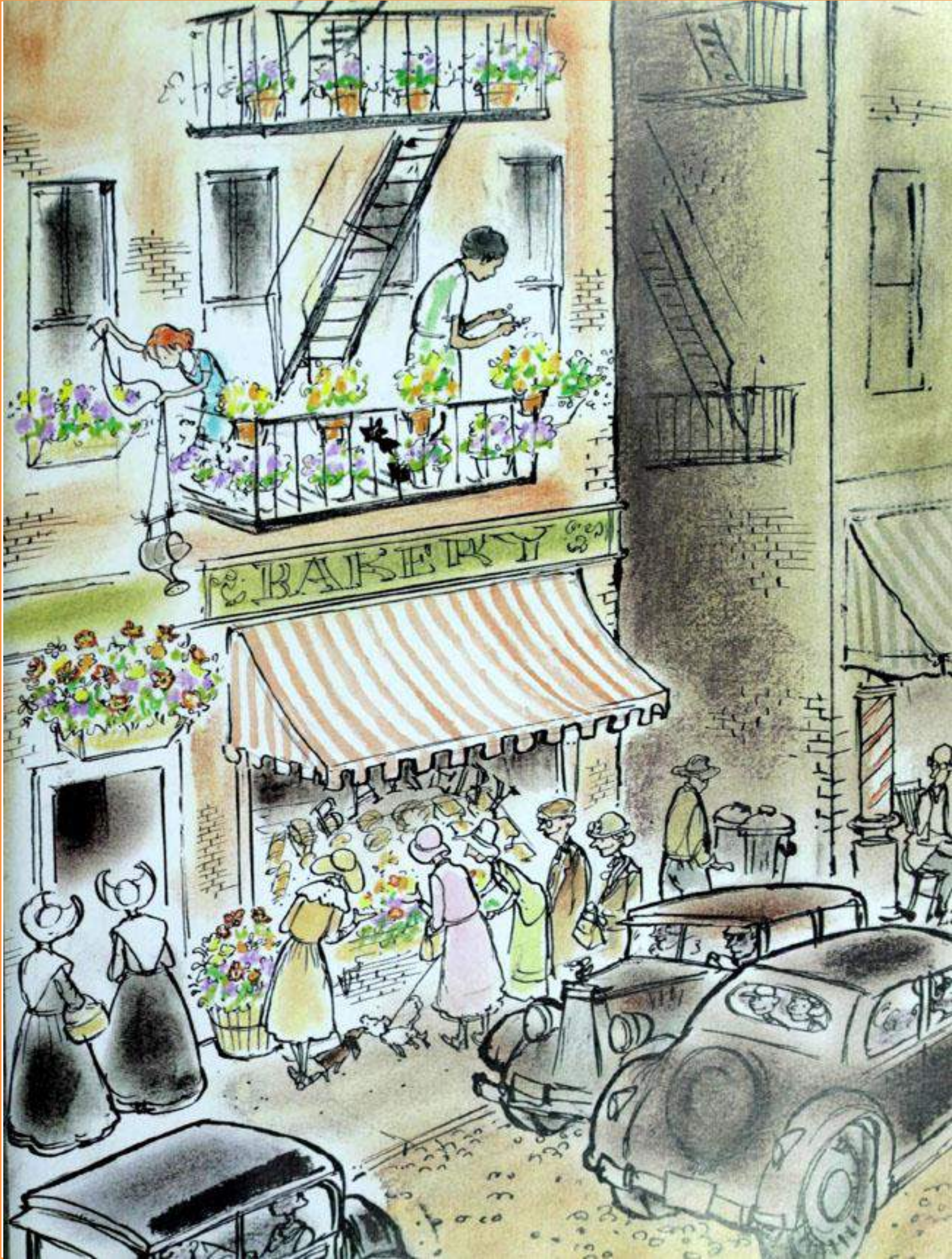
अब सभी जगह फूल खिल रहे हैं. मैं साथ में मूली, प्याज़ और तीन तरह के पालक भी खिड़कियों में रखे डिब्बों में उगा रही हूँ.

कुछ पड़ोसी भी खाली डिब्बे लाए हैं और मैं उन्हें फूलों के पौधों से भर देती हूँ. कुछ ग्राहकों ने अपने बगीचों के पौधे भी मुझे लाकर दिए हैं. वे मुझे "लिडिया ग्रेस" की जगह "माली" के नाम से बुलाते हैं.

सबको प्रेम - लिडिया ग्रेस

नोट : मुझे उम्मीद है अंकल जिम जल्द ही हँसेंगे. मैं जल्द ही उन्हें अपना गुप्त स्थान दिखाऊंगी.





जुलाई 04, 1936

प्रिय माँ, पापा, नानी,

मैं आज खुशी से फूली नहीं समा रही हूँ!
आज पूरा शहर मुझे बहुत सुन्दर लग रहा है -
खासकर सुबह का समय.

मेरा गुप्त स्थान अब अंकल जिम के लिए
तैयार है. आज दोपहर को हमारी दुकान छुट्टी के
लिए बंद होगी. फिर मैं अंकल जिम को ऊपर छत
पर लेकर जाऊंगी.

आपने मुझे सुन्दरता के बारे में जो कुछ भी
सिखाया था वो मुझे अभी भी अच्छी तरह याद है.

सबको प्रेम - लिडिया ग्रेस

नोट : मैं अंकल जिम की मुस्कराहट की
कल्पना कर सकती हूँ!





ऊपर
जाएँ







जुलाई 11, 1936

प्रिय माँ, पापा, नानी,

मेरा दिल इतनी जोर से धड़क रहा है, कि उसे नीचे के ग्राहक भी आसानी से सुन पाएंगे!

आज दोपहर के खाने के बाद अंकल जिम ने दुकान के बाहर "बंद" का साईनबोर्ड लगा दिया. फिर उन्होंने एड, एम्मा और मुझे ऊपर जाकर इंतज़ार करने को कहा. फिर वो एक बेहतरीन केक लेकर आए. केक पूरी तरह फूलों से सजा हुआ था!

मुझे पूरा यकीन है कि वो केक एक हज़ार मुस्कुराहटों जैसा था.

फिर उन्होंने आपका पत्र अपनी जेब में से निकाला और हमें पापा की नौकरी की खुशखबरी सुनाई!

मैं जल्दी ही घर आऊंगी!!

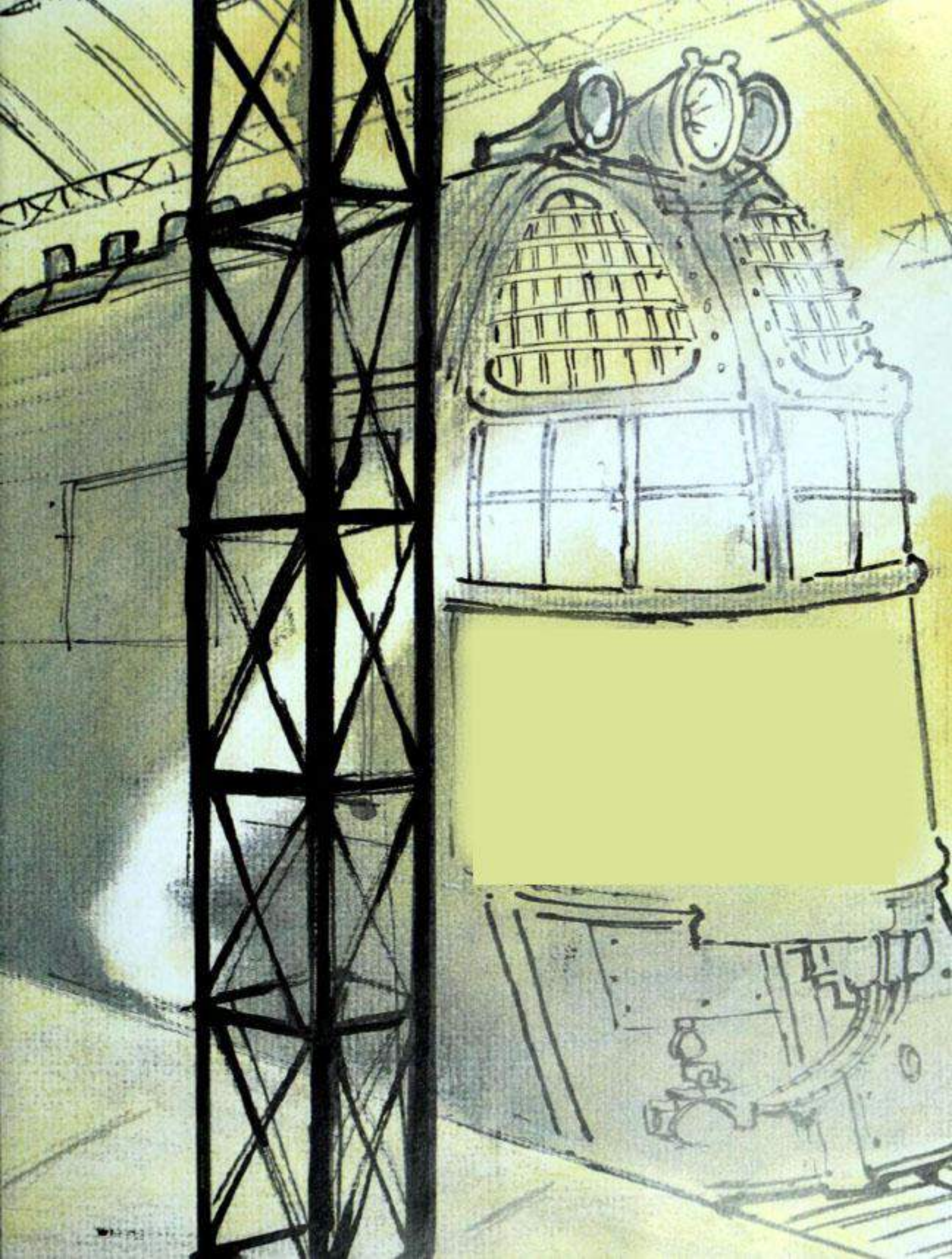
सबको प्रेम और जल्दी ही मुलाकात की उम्मीद

लिडिया ग्रेस

नोट : नानी, मैंने अपने सारे पौधे एम्मा को दे दिए हैं. मैं जल्दी ही आकर बगीचे में आपकी मदद करूंगी. हम जैसे माली कभी रिटायर नहीं होते हैं.











1998 में कैलडीकोट अवार्ड से सम्मानित

“माली” एक गाँव की बच्ची की सरल कहानी है.

उस समय पूरी दुनिया में, खासकर अमरीका में मंदी का दौर था. आर्थिक तंगी के वजह से उस लड़की को अपने मामा के साथ एक बड़े शहर में जाकर रहना पड़ा. मामा का चेहरा हमेशा गंभीर बना रहता था. उस छोटी लड़की का सिर्फ एक मिशन था – मामा के चेहरे पर मुस्कराहट लाना!

